Title: Need to ensure plantation in mining areas of Aravali hills in Rajasthan with a view to check environmental degradation.

श्री भेरूलाल मीणा (सलूम्बर) : उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान में अरावली पहाड़ी की विभिन्न श्रेणियों में पर्यावरण की स्थिति खराब होने का मुख्य कारण खनन् कार्यों पर थोप कर राजस्थान में 8900 खानों को बन्द कर दिया गया जनमें हिन्दुस्तान जिंक लि., आर.एस.एम.एम., ग्रीन मार्बल, ग्रेनाइट, सोप स्टोन आदि के श्रमिक प्रभावित हुए एवं उनके परिवार के सदस्यों को जोड़ें, तो यह संख्या 12 लाख के लगभग थी। इसके अतिरिक्त मार्बल जिंस, लाइम स्टोन आदि सबको ढोने वाले ट्रकों पर काम करने वाले श्रमिक, साथ ही मार्बल की एजेंसियां, रॉक फास्फेट का कार्य बुरी तरह प्रभावित रहा था। राजस्थान में मात्र यही एक धंधा है जिस पर लाखों परिवारों का जीवन निर्भर करता है। साथ ही राजस्थान सरकार एवं भारत सरकार को इस खनन् उद्योग से रॉयल्टी, टैक्स के रूप में रोजाना करीब 2 करोड़ की आय प्राप्त होती है। अरावली के वनों की सुरक्षा के लिए भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा धन दिया जाता है। इसके अलावा विदेशी पूंजी भी अरबों रुपयों में वन विभाग द्वारा खर्च की जाती है फिर भी ये वन खत्म हो गए हैं। एक पहाड़ी में एक छोटा सा खनन हो उससे पर्यावरण पर कोई असर नहीं होता है, किन्तु खनन् करने वालों को जिम्मेदारी दी जाए कि जितने क्षेत्र में खनन् किया जाता है, वहां साथ-साथ पेड़ भी लगाए जाएं। इससे न ही खनन् कार्य प्रभावित होगा और वन लगाकर उनकी रक्षा भी की जा सकेगी। मेरा भारत सरकार से अनुरोध है कि खनन् क्षेत्र में वन लगाने तथा उनकी सुरक्षा के लिए ज्यादा से ज्यादा प्रयास किए जाएं ताकि पर्यावरण को क्षति न पहुंचे।